REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 6 | MARCH - 2024

प्लेटो के दार्शनिक विचारों का अनुशीलन

सन्दीप सिंह राठौर
(सहायक प्राध्यापक) राज बहादुर सिंह डिग्री कॉलेज, लखना, इटावा, उत्तर प्रदेश.

सारांश :

शिक्षा मनुष्य की सर्वागीण विकास करती है, मनुष्य समाज का निर्माण करता है। एक उत्तम समाज, के निर्माण हेतु यह आवश्यक है कि समाज के नागरिकों को ऐसी शिक्षा दी जायें जो उनके चरित्र, सद्गुणों और नैतिक मूल्यों का विकास करें। शिक्षा की अवधारणा में समयानुसार व आवश्यकतानुसार परिवर्तन करके उसे समाजोपयोगी बनाया जाय।

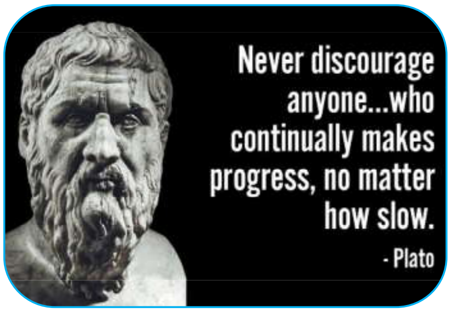

आज हम शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए भटक रहे है लेकिन प्लेटो जी का दर्शन आज सूर्य के समान प्रकाशित होकर अंधकार को दूर करने हेतु तत्पर है। आज दम तोड़ रही शिक्षा की उच्चीभूत करने में प्लेटो जी के विचारों का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है।

अंग्रेजी शासन काल में विकसित शिक्षा पद्धति दम तोड़ चुकी है इसका विकास आज भारतीयकरण के रूप में होना भारत जैसे महान राष्ट्र के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। प्रचलित शिक्षा पद्धति को नये राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण के साथ संसोधित कर पुर्ननिर्मित करना तथा भारतीय संस्कृति, सभ्यता, गौरवमीय परम्पराओं, वेदों तथा आदर्शो की व्यापक शिक्षा जो उत्पादनशीलता के साथ जुड़ी हो और जिसमें राष्ट्र प्रेम, सहिष्णुता, आत्मसंयम जैसे राष्ट्रीय चारित्रिक गुणों का छात्रों में विकसित किया जायें। शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक पिछड़ेपन तथा अलाभकारी शिक्षा के कारण देश की स्थिति काफी शोचनीय होती जा रही है।

इस समस्या के समाधान के लिए इस क्षेत्र में अनुसंधान की सम्भावनााऐं तलाश करना आवश्यक है।, संस्कृतिक का ह्रास व अलाभकारी शिक्षा जो समाज के ढांचे को पूर्णरूप से नष्ट करने के लिए आतुर है इससे मात्र प्लेटो जी के प्रभावोत्पादक विचार व दर्शन ही उभार सकते हैं। और इसी उद्देश्य हेतु अनेक विचारकों एवं शिक्षा विदों ने अपने मत व सिद्धान्त प्रस्तुत किए हैं। प्लेटो के विचारों व दार्शनिक अवधारणा का शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग व उनकी आदर्शवादी विचारधारा का शिक्षा की प्रक्रिया को उत्तम बनाने हेतु प्रयोग ही इस शोध **पत्र** का औचित्य है। **इसमे** प्लेटो के दार्शनिक विचारों का विवेचन तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा, मूल्य मीमांसा आधार पर किया है।

संकेत शब्द : प्लेटो, दार्शनिक दृष्टिकोण, आत्मानुभूति.

प्रस्तावना –

भारतीय शिक्षण के भीतर सामाजिक सरोकरों को पैदा करने वाली शक्तियों की आवश्यकता हमेशा से रही है। इसमें सन्देह नहीं कि समाज में बड़ें पैमानें पर परिवर्तन लाने का कार्य शिक्षा ही करती रही है। महान दार्शनिक तथा शिक्षाशास्त्री प्लेटो का भी यही मानना है कि अच्छी शिक्षा द्वारा ही समाज में सुधा लाए जा सकते है विश्व भर में आधुनिक शिक्षा प्लेटो के शैक्षिक सिद्धान्तों से किसी न किसी रूप में प्रभावित हुई है। प्लेटो का जन्म 428 ई0 पूर्व में एथेन्स नगर में हुआ था। लेकिन कुछ विचारक इनका जन्म स्थान 427 ई0पूर्व मानते हैं।

इनकी माता का नाम एरिस्टोन तथा पिता का नाम पेरिक्टोन था प्लेटो का प्रारम्भिक नाम एरिस्टोकिल्स पड़ा, बाद में वे अपने प्यार के नाम 'प्लेटो' से विख्यात हुए । प्लेटो का अफलातून के नाम से भी जाना जाता है। प्लेटों एक अमीर एवं प्रसिद्ध घराने मे पैदा हुए थे। उनकी माता सोलन की वंशज थीं और पिता की ओर से कॉड्रस का खून उनकी नसों में बहता था। कॉड्रस एथेन्स का सबसे अन्तिम राजा था, और सोलन एथेन्स का सबसे अन्तिम राजा था, और सोलन एथेन्स का प्रसिद्ध व्यवस्थापक था। जिसने एथेन्स को प्रसिद्ध कानून भेंट किया था। इन प्रसिद्ध पूर्वजों के कारण प्लेटों के परिवार को ऐश्वर्य एवं सामाजिक सम्मान दोनों ही प्राप्त थे।

प्लेटो का पालन—पोषण अमीरों की भांति हुआ था। इसलिए प्लेटो का स्वभाव प्रारम्भ से ही उच्चाभिलाषी था तथा सभी प्रकार के व्यक्तियों से मिलना वे पंसद नहीं करते थे। अमीर तबियत के होते हुए भी प्लेटो ने तत्कालीन उच्च शिक्षा प्राप्त की।

दार्शनिक विचारधारा

प्लेटो के **दार्शनिक** दृष्टिकोंण को निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत समझा जा सकता है —

तत्व मीमांसा —

दर्शन की इस शाखा का सम्बन्ध वास्तविकता की समस्या के साथ है। वास्तविकता से सम्बन्धित प्रश्न तत्व मीमांसा में पूछे जाते हैं और उनका उत्तर देने का प्रयास किया जाता है जैसे —

1. मनुष्य की वास्तविकता क्या है ?
2. इस जगत की वास्तविकता क्या है ?
3. ईश्वर का स्वरूप क्या है ?
4. मनुष्य स्वतन्त्र है या कोई ब्रहम शक्ति उसका नियन्त्रण करती है?
5. भौतिक जगत क्या है तथा सृष्टि की उत्पत्ति कब हुई ?

आदि बातों का अध्ययन किया जाता है —

प्लेटो ने इस ब्रहाण्ड को दो भागों में विभाजित किया है —

1. विचार जगत
2. वस्तु जगत

विचारों को वे अनादि और अनन्त तथा अपरिवर्तनशील मानते है। उनकी दृष्टि से इन विचारों में एक दैवीय और नैतिक व्यवस्था होती है। जिसकी सहायता से ईश्वर इस जगत का निर्माण करता है। विचारों की नैतिक आदर्शवाद कहा जाता है। आत्मा को प्लेटो ईश्वर का अंश मानते हैं। इनके अनुसार आत्मा इस संसार में आने से पहले विचारों के संसार मे ही जाने को इच्छुक रहती है।

प्लेटो के विचार आदर्शवादी हैं प्लेटो विचार को ही जीवन की वास्तविकता एवं अन्तिम सत्य मानते हैं । उनके अनुसार विचार का सम्बन्ध मस्तिष्क में रहने वाले विचार से नहीं है क्योंकि इस प्रकार के विचारों का कोई अस्तित्व नहीं होता है। यह विचार क्षण—भंगुर होता है सत्य विचार का सम्बन्ध जीवन के शाश्वत मूल्यों से होता है। विचार समस्त वस्तु जगत का सार होता है। यह सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के आदर्श का निर्माण करता है। विचार के माध्यम से वास्तविक दैवी व्यवस्था का निर्माण होता है। प्लेटो ने संसार सम्बन्धी विचारों में संसार के सम्बन्ध में दो प्रकार का वर्णन किया है। प्रथम संसार में यह विचारों का अध्ययन करते हैं जिसे वह विचारों का संसार मानते हैं।

द्वितीय संसार वस्तुओं से सम्बन्धित होता है, जिसमें वस्तुओं का महत्व होता है और जिनका सम्पर्क विभिन्न वस्तुओं से होता है। विचारों के जगत का अस्तित्व स्थायी होता है और इन्द्रिया—ज्ञात वस्तुओं का जगत अस्थायी होता है तथा विचारों के द्वारा ही उसका स्वरूप निर्धारित होता है।

अतः प्लेटो के अनुसार मनुष्य की आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध होने के कारण मनुष्य की आत्मा भी परमात्मा का ही अंश है। अतः वह भी अपने विचारों के आधार पर स्थूल पदार्थो को नए रूप देता है। और

मूर्तियां, भवन, वस्त्र, बर्तन आदि वस्तुऐं बनाता है। इसके अनुसार भौतिक जगत की प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है, क्योंकि यह सत्य की छाया मात्र है।

इसीलिए प्लेटो कहते हैं कि बाह्य वस्तुँ जैसी दिखाई देती हैं उनसे वास्तविक ज्ञान नहीं मिलता, हॉ कुछ सीमा तक इन वस्तुओं से प्राप्त ज्ञान मूल्यवान हो सकता है। इसलिए प्लेटो मनुष्य के विचारों में ही समस्त संसार निहित मानते है।

इस प्रकार समझा जा सकता है कि मनुष्य शरीर नष्ट होने पर भी उसका अस्तित्व रहता है क्योंकि वह परमतत्व का अंश होती है, अच्छे विचारों से युक्त जीवन होने के कारण मृत्यु के बाद आत्मा निवास आनन्द लोक में होता है, जबकि इसके विपरीत बुरे कार्यो से अशुद्ध विचार होते हैं और इससे आत्मा उच्च श्रेणी में न होकर निम्न श्रेणी के जीवों में प्रवेश करती है। इस तरह मनुष्य की उन्नति व अवनति से आत्मा को सुखः दुख भोगना पड़ता है।

ज्ञान मीमांसा –

इसमें सत्य ज्ञान से सम्बन्धित समस्याओं का हल खोजा जाता है । जैसे

1. सत्य ज्ञान क्या है ?
2. इस ज्ञान को प्राप्त करने के साधन कौन से है ?
3. क्या मानव बुद्धि इस ज्ञान को प्राप्त कर सकती है ?
4. क्या ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त किया गया ज्ञान वास्तविक है ?
5. या आत्मा द्वारा प्राप्त किया गया ?

आदि का अध्ययन किया जाता है।

प्लेटो के अनुसार विचारों की दैवीय व्यवस्था और आत्मा परमात्मा के स्वरूप को जानना की सच्चा ज्ञान है। ज्ञान को उन्होनें तीन रूपों में बॉटा है –

इन्द्रिय जन्य ज्ञान –

इन्द्रिय जन्य ज्ञान जैसे – मीठा, कड़ा, गर्म, ठण्डा आदि को प्लेटो निम्न कोटि का ज्ञान मानते हैं, क्योंकि इसका सम्बन्ध स्थल जगत से है। इन्द्रियों द्वारा हम जिन वस्तुओं एवं क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं। वे परिवर्तनशील और असत्य हैं।

सम्मति जन्य ज्ञान –

सम्मति जन्य ज्ञान को वे आंशिक रूप में सत्य मानते है, क्योंकि वह भी अनुमान जन्य होता है और अनुमान सत्य भी हो सकता है, असत्य भी । इसलिए प्लेटो सम्मति द्वारा प्राप्त ज्ञान को भी पूर्ण ज्ञान नहीं मानते, क्योंकि सम्मति अस्थायी और परिवर्तनशील है। विचार आत्मप्रेरित हैं और सम्मति इन्द्रिय जन्य। विचार आत्म ज्ञान का उद्गम है और सम्मति बाह्य ज्ञान का सोपन । किसी विशेष परिथिति में ही किसी विषय के प्रति दी गई सम्मति उपयोगी और मान्य हो सकती है।

चिन्तन जन्य ज्ञान –

प्लेटो के अनुसार चिन्तन जन्य ज्ञान ही सत्य होता है क्योंकि यह सत्य हमें विचारों के रूप में प्राप्त होता है और विचार अपने में अपरिवर्तन शील और सत्य होते है। सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् के भाव इसी ज्ञान की उपज हैं।

उनके अनुसार प्रत्तयों की दुनिया का ज्ञान इन्द्रियातीत, अमूर्त एवं वस्तुनिरपेक्ष, है। इसे ही कल्पना का ज्ञान भी कहते हैं। यह ज्ञान बुद्धि विचार तथा विवेक के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। यह ज्ञान ब्राह्य–सृष्टि से प्राप्त किया जा सकता है। यह ज्ञान बाह्य–सृष्टि से प्राप्त नहीं होता यह मन में सुप्तावस्था में रहता है। जिन व्यक्तियों विशेष बौद्धिक पात्रता होती है उन्हीं के मन में यह जागृत होता है। ऐसे लोगों को दार्शनिक या तत्व ज्ञानी वर्ग में रखा जाता है।

गुणों के आधार पर प्लेटो ने मनुष्य को भी बांटने का प्रयत्न किया है। तृष्ण की विशेषता वाला तीसरा वर्ग है जो व्यापारी, उद्योगपति, दुकानदार व किसान आदि का वर्ग है। इन्हें हम व्यवसायी कह सकते हैं। इच्छा शक्ति की विशेषता वाला दूसरा वर्ग है जो सैनिकों का है जिनका दायित्व शान्ती स्थापना, सुरक्षा, युद्ध व्यवस्था ज्ञान एवं न्याय से युकत विवेक या तर्क रखना है। इस वर्ग को सबसे अधिक जिम्मेदारी दी है। इस वर्ग का विभाजन उन्होनें जाति के ऊपर निर्भर न करके वरन् बुद्धि व ज्ञान पर किया है।

अतः प्लेटो के अनुसार ज्ञानी व्यक्ति वह जो दृष्टि–जगत दृष्टि हटाकर प्रत्ययों की दुनिया का चिन्तन करता है। क्योंकि प्रत्यये की दुनिया का ज्ञान सच्चा ज्ञान है।

मूल्य मीमांसा –

इसमें मूल्य से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर खोजे जाते हैं।
जीवन के लिए उत्तम मूल्य क्या हैं ?
इन मूल्यों को कैसे कार्य रूप दिया जा सकता है ?
मूल्यों की प्रकृति क्या है ?
प्लेटो आदर्शवाद के जन्मदाता हैं। उन्होनें विवेकार्जित ज्ञान को ही सच्चा ज्ञान माना है।

इनके अनुसार संसार सत और असत् दोनों का संयोग है। प्रत्तय की अनुकृति होने के कारण सांसारिक पदार्थ सत्य हैं प्लेटो के अनुसार मनुष्य जीवन का उद्देश्य आत्मानुभूति है। आत्मानुभूति के लिए वे तीन सनातन मूल्यों सत्यम्, शिवम्, और सुन्दरम् की प्राप्ति आवश्यक समझते हैं और इन मूल्यों की प्राप्ति के लिए नैतिक जीवन जीने पर बल देते हैं।
प्लेटो का मत है

''कुछ परमपूर्ण है और उसी परमपूर्ण से परम सौन्दय्र तथा परम उत्तमता का जन्म हुआ है। यहीं विश्व का परम सत्य है। यदि कोई वस्तु सुन्दर है तो वह इसलिए सुन्दर है क्योंकि उसने परमसुन्दर से कुछ अंश लिया है। कोई वस्तु तभी सुन्दर बनती है ज बवह परम् सौन्दर्य से सम्बन्धित हो परम सौन्दर्य ही वस्तुओं को सुन्दर बनाता है।

प्लेटो के अनुसार सत्यं, शिवं, सुन्दरम् इन तीनों जीवन के मूल्यों में सबसे उच्च वास्तविकता शिवं की है। उनका यह मानना है कि नैतिकता के लिए कुछ सद्गुणों का विकास आवश्यक है। ये सद्गुण शिवं से सम्बन्धित होते हैं। आत्म–यिंत्रण, उदारता, संयम, धैर्यशीलता, साहस और ज्ञान ये समस्त शिवं की ओर ही ले जाने वाले हैं।

निष्कर्ष-

दार्शनिक दृष्टिकोण को प्लेटो निम्न प्रकार से समझाते है –
अ. तत्व मीमांसा
ब. ज्ञान मीमांसा
स. मूल्य मीमांसा

अ. तत्व मीमांसा –

1. प्लेटों विचार को ही जीवन की वास्तविकता एवं अन्तिम सत्य मानते है।
2. सत्य विचार का सम्बन्ध जीवन के शाश्वत मूल्यों से होता है।
3. सत्य विचार सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्, के आदर्श का निर्माण करता है।
4. प्लेटो ने संसार सम्बन्धी विचारों में दो प्रकार के संसार का वर्णन किया है।
5. प्रथम संसार में वे विचारों का अध्ययन करते है।
6. द्वितीय संसार में प्लेटो वस्तुओं को अधिक महत्व देते हैं।
7. भौतिक जगत की प्रत्येक वस्तु परिवर्तन शील है।
8. प्लेटो मनुष्य के विचारों में ही समस्त संसार निहित मानते है।

ब. ज्ञान मीमांसा –

प्लेटो ने ज्ञान को तीन भागों में बांटा है –

1. इन्द्रिय जन्य ज्ञान – को वे असत्य मानते है, तथा इसे कल्पना भी कहते है।
2. सम्मति जन्य ज्ञान – को प्लेटो आंशिक रूप से सत्य मानते है।
3. प्लेटो के अनुसार चिन्तन जन्य ज्ञान ही सच्चा ज्ञान होता है। तथा प्लेटो के दृष्टि से ज्ञान का आधार विवेक माना है प्लेटो के अनुसार सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् के भाव इसी ज्ञान की उपज हैं।

स. मूल्य मीमांसा –

1. प्लेटो के अनुसार मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य आत्मानुभूति है।
2. आत्मानुभूति के लिए वे तीन सनातन मूल्यो, सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् की प्राप्ति आवश्यक मानते है।
3. प्रत्यय की अनुकृति होने के कारण प्लेटो सांसारिक पदार्थ को सत् मानते है। परन्तु एकता तथा स्थिरता के कारण वे असत है।

सन्दर्भ ग्रन्थ – सूची

1. पचौरी, गिरीश, (2008). ''विश्व के महान शिक्षाशास्त्री'', मेरठ, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस।
2. लाल एवं तोमर, (2008). ''विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिन्तक'', मेरठ, आर0लाल0बुक डिपो।
3. लाल, प्रो0 रमन बिहारी एवं पलोड़, श्रीमती सुनीता, 2010, ''शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग'' आर0लाल0 बुक डिपो, मेरठ, ।
4. शर्मा, एन0आर0,(2007), ''फिलोसफी एण्ड सोशियोलॉजी ऑफ एजुकेशन'' सुरजीत पब्लिकेशन नई दिल्ली, ।
5. शर्मा, श्रीमती आर0के0, दुबे, श्री कृष्ण एवं शर्मा हरिशंकर, (नवीनतम् संस्करण) ''शिक्षा के दर्शनशास्त्री आधार'' राधा प्रकाशन मन्दिर प्रा0लि0, आगरा,।
6. शर्मा, डॉ रामसिंह एवं श्रीवास्तव, डॉ0 रूपाली, (2007) ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार'' संजय पब्लिकेशन, आगरा ।
7. आर0लाल0 बुक डिपो, मेरठ, ।
8. शर्मा, योगेन्द्र कुमार एवं शर्मा मधुलिका, (2009), ''शिक्षा के दार्शनिक आधार'' कनिष्क पब्लिशर्स, ,
9. शर्मा, डॉ0 ओ0पी0, (2007–2008), ''शिक्षा के दार्शनिक आधार'', अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, ।
10. शर्मा, रामनाथ एवं राजेन्द्र कुमार शर्मा, (2008), ''शिक्षा दर्शन'' एटलाटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, ।
11. साहू, भागीरथी, (2002), ''द न्यू एजुकेशन फिलॉसफी'' स्वरूप एण्ड सन्स, नई दिल्ली,
12. सक्सैना, एन0आर0 स्वरुप एवं चतुर्वेदी, शिखा, (2007), ''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा'' आर0लाल0 बुक डिपो, मेरठ, ।
13. सक्सैना, एस आर स्वरूप, चतुर्वेदी, डॉ0 श्रीमती शिखा चतुर्वेदी एवं पाण्डेय, डॉ के0पी0, (2001) ''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक''
14. आर लाल बुक डिपो, मेरठ,
15. सिंह डॉ वी0के0 एवं नाथ, श्रीमती रूचिका (2007) ''एजूकेशनल इन इमरजिंग इंडियन सोसायटी'' एन0पी0एच0 पब्लिशिंग कॉरपुरेशन, नई दिल्ली, ।
16. पाण्डेय, रामशकल, (2007), 'विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री', विनोद पब्लिकेशन, आगरा।
17. द रिपब्लिक The Ripublic
18. द स्टेटस मैन
19. द लॉज The Laws
20. Apology

21. crito
22. Charmidies
23. Gorgias
24. Protagoras

सन्दीप सिंह राठौर
(सहायक प्राध्यापक) राज बहादुर सिंह डिग्री कॉलेज, लखना, इटावा, उत्तर प्रदेश.